14

भ्वादिप्रकरण में – भू धातु के लिट् और लुट् लकार में रूपसिद्धि

व्याकरण का अध्ययन सोपान क्रम से होता है। अर्थात् दसवीं कक्षा की व्याकरण की पुस्तक को जो जानता है वह ही यहाँ पढ़ने और रूपों को समझने एवं सिद्ध करने में समर्थ हो सकता है।भूवादयो धातवः इस सूत्र से धातुपाठ में पठित धातुओं की धातुसंज्ञा होती हैं, यह दसवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक में विषय था। इस समय भी तिङन्तप्रकरण में लट्-लकार में बहुत सूत्र आए हैं,जिनका यहाँ लिट् लकार में प्रयोग होता है। अतः लट् लकार का सम्यक् ज्ञान उपार्जित करके यहाँ प्रवर्तित होना चाहिए। और भी रूपसिद्धि में यद्यपि पूर्वसूत्रों और परिभाषाओं की बहुत आवश्यकता है फिर भी उन सबको सभी रूपों में नहीं कहा गया है। कुछ रूपों को नायक की भाँति प्रदर्शित किया गया है। अन्य रूपों में छात्र स्वयं उन स्थलों को समझेगें यह अपेक्षा है।

यहाँ सम्यक् धातुरूप की सिद्धि प्रधान लक्ष्य है। प्रथम धातुसंज्ञा। तत्पश्चात् लकारविधान। तत्पश्चात् लादेशविधान। तत्पश्चात् प्रसङ्ग होने पर शबादिविकरण विधान। लिट्-लकार में अभ्यासकार्य। तत्पश्चात् धातु और प्रत्यय के सन्धिकार्य। इस प्रकार क्रम से सामान्यतः रहे। सिद्ध होता है। यहाँ तक धातुसंज्ञा, लकारविधान, ल के स्थान पर तिङ् का विधान, कहीं धातु और प्रत्ययों की सन्धि,ये सब कार्य पूर्व पाठ में आ चुके हैं। यहाँ से बाद में लिट्-लकार में इनका उपयोग और अभ्यासादि कार्य नूतन विषय आता है।

इस पाठ में ही लिट् लकारोत्तर लुट् लकार प्रस्तुत है। क्योंकि लकारों का क्रम माहेश्वर सूत्र के क्रम के अनुसार है। यद्यपि स्वयं पाणिनी ने अष्टाध्यायी में भिन्न ही क्रम से सूत्रों को रखा है,तथापि सभी के द्वारा आदृत क्रम ही यहाँ भी आदरित है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप -

- लिट् लकार के सूत्र जानेंगे;
- लिट् लकार में धातु रूप सिद्ध करने में सक्षम होंगे;
- लिट् लकार को प्रयोग करने में समर्थ होंगे;
- संस्कृत व्याकरण में परोक्षकाल को जानेंगे;
- अभ्यास कार्य को करने में सक्षम होगें;
- भूधातु के लुट् लकार में रूप कैसे होते हैं जानेगें;
- लुट् लकार के सूत्रों की व्याख्या करने के लिए समर्थ होगें;
- अनद्यतन भविष्यत् काल की क्रिया के प्रकटन के लिए लुट् का प्रयोग करने में समर्थ होंगे;
- अनुवृत्ति,अधिकार, आक्षेप, तदादिविधि, तदन्तविधि, इनका और इनसे भी अधिक प्रयोगस्थलों को जानेगें।

भूधातु के लिट्-लकार के रूप

14.1 परोक्षे लिट्॥ (३.२.११५)

सूत्रार्थ - भूताऽनद्यतनपरोक्षार्थवृत्ति की धातु से लिट् हो।

सूत्रव्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र के द्वारा लिट् लकार का विधान किया जाता है। यह सूत्र द्विपदात्मक है। परोक्षे यह सप्तम्येकवचनान्त समस्तपद है। अक्ष्णोः परम् परोक्षम् यह अव्ययीभावसमास है। यहाँ अक्षि शब्द इन्द्रिय सामान्यवाची है। इन्द्रिय अगोचरत्व परोक्षत्व है। लिट् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। अनद्यतने लङ् इस सूत्र से अनद्यतने यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। अद्य भवः अद्यतनः, अविद्यमानः अद्यतनः यस्मिन् सः अनद्यतनः कालः यह बहुव्रीहिसमास है। अतीत रात्रि के अन्त्य से लेकर आगामी रात्रि के प्रारम्भ तक सहित काल अद्यतन है। तद्भिन्न अनद्यतन है। भूते यह सूत्र अधिकार में पठित सूत्र है। भूतत्व नाम अतीतकाल का है। धातोः यह अधिकृत है। 'प्रत्ययः' (३.१.१) और 'परश्च' (३.१.२) ये सूत्रद्वय यहाँ अधिकृत है। यह सूत्र प्रत्ययाधिकार में पढा गया है।इस कारण से लिट् यह प्रत्यय है। धातोः यह पञ्चम्यन्त पद है। तस्मादित्युत्तरस्य इस परिभाषा के प्रभाव से और परश्च इस सूत्र के बल से लिट् धातु से अव्यवहित पर विधान किया जाता है। इससे भूत अनद्यतन परोक्ष में धातु से परे लिट् प्रत्यय होता है यह सूत्रगत पदों का अन्वय है। लिड् यह प्रथमान्त विधेय बोधक पद है। भूते अनद्यतने परोक्षे ये तीनों ही सप्तम्यन्त पदों में विषय सप्तमी है। इस प्रकार क्रिया के भूत, अनद्यतन और परोक्षत्व विवक्षा में धातु से लिट् हो यह सूत्रार्थ होता है।

टिप्पणियाँ

धातु का अर्थ व्यापार और फल है,यह कहा गया है। जिस धातु का अर्थ व्यापार अर्थात् क्रिया अनद्यतन भूत और परोक्ष में है, वह धातु भूताऽनद्यतनपरोक्षार्थवृत्ति कहलाता है। तस्मिन् काले क्रियायाः वृत्तिः यस्य स भूताऽनद्यतनपरोक्षक्रियावृत्तिः धातुः। यदि उस काल में क्रिया के प्रकटन की विवक्षा है तो धातु से लिट् विधान किया जाता है।

उदाहरण - रामः अयोध्याया राजा बभूव।

सूत्रार्थसमन्वय - अयोध्या में राजा राम थे। परन्तु उस अवस्था भूत राम को वक्ता ने प्रत्यक्ष नहीं किया। अतः यहाँ लिट् प्रयुक्त हुआ है।

बभूव - भू धातु से भूतानद्यतनपरोक्षार्थ वृत्तित्व विवक्षा में परोक्षे लिट् इस सूत्र से कर्ता में लिट्लकार विधान किया जाता है। लिट् के इकार और टकार की इत्संज्ञा और लोप करने पर भू ल् इस स्थिति में ल के स्थान पर प्रथमपुरुषैकवचन की विवक्षा में तिपि भू ति यह होता है। तब -

14.2 परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः॥ (३.४.८२)

सूत्रार्थ - लिट् के स्थान पर विधीयमान परस्मैपदसंज्ञक तिप् आदि नौ के स्थान पर णलादि नौ प्रत्यय हो।

सूत्रव्याख्या - पाणिनी के छः प्रकार के सूत्रों में यह साक्षात् लक्ष्यसंस्कारत्व होने से विधिसूत्र है। यह द्विपदात्मक सूत्र है। परस्मैपदानाम् यह षष्ठीबहुवचनान्त पद है। और यह स्थान षष्ठी है। उससे परस्मैपदसंज्ञक प्रत्ययों के स्थान पर यह अर्थ आता है। तिप्-तस्-झि-सिप्-थस्-थ-मिप्-वस्-मस् ये नौ परस्मैपदसंज्ञक प्रत्यय हैं। णल्-अतुस्-उस्-थल्-अथुस्-अ-णल्-व-मः यह प्रथमाबहुवचनान्त समस्तपद है। णल् च अतुस् च उस् च थल् च अथुस् च अः च णल् च वः च मः च णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः, यह इतरेतरद्वन्द्वसमास है। 'लिटस्तझयोरेशिरेच्' इस सूत्र से लिटः यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। धातोः (३.१.९१) इसका अधिकार है। धातोः लिटः परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः यह सूत्रगतपदों का अन्वय है। अतः लिट्स्थानी परस्मैदसंज्ञक नौ प्रत्ययों के स्न पर णलादि नौ प्रत्यय क्रम से हो यह अर्थ है।

णलादि नौ प्रत्यय हैं। परस्मैपदसंज्ञक भी नौ ही है। अतः स्थानी और आदेश की समान संख्या होने से यथासंख्यमनुदेशः समानाम् इस परिभाषा से तिप् आदि के स्थान पर णलादि क्रम से होते हैं। वे हैं -

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
	स्थानी - आदेशः	स्थानी - आदेशः	स्थानी - आदेशः
प्रथमपुरुषः	तिप् - णल् (अ)	तस् - अतुस्	झि - उस्
मध्यमपुरुषः	सिप् - थल् (थ)	थस् - अथुस्	थ - अ
उत्तमपुरुषः	मिप् - णल् (अ)	वस् - व	मस् - म

तिप् आदि के स्थान पर णलादि विधान किए जाते हैं। जब तक णलादि तिप् आदि का स्थानग्रहण करते हैं तब तक तिप् आदि के धर्म णलादि पर आरोपित नहीं किए जाते हैं। अतएव णलादि की प्रत्ययसंज्ञा भी णलादि प्रयोग के बाद ही है। अत: जब तक णल् तिप् की निवृत्ति नहीं करता है तब तक णल् प्रत्यय नहीं है। प्रत्यय नहीं है तो 'चुटू' इस सूत्र से उसके आदि णकार की इत्संज्ञा नहीं होती है। अत: प्रयोग से पूर्व णल् अनेकाल्त्व है। अत: 'अनेकाल्शित् सर्वस्य' इस सूत्र में सम्पूर्ण तिप् के स्थान पर ही आदेश होता है न कि 'अलोऽन्त्यस्य' इस परिभाषा से अन्त्य के स्थान पर। इस प्रकार उन उन प्रत्ययों में जानना चाहिए। और भी अ यह आदेश यद्यपि एकाल् है फिर भी यह (अ+अ) दोनों अकार के प्रश्लेष होने से संहिता से सिद्ध आदेश है। अतो गुणे यह पररूप यहाँ होता है, अत: यहाँ सवर्णदीर्घ नहीं होता है। उससे यह सर्वादेश का निर्बाध सम्भव होता है।

उदाहरण -

स्थानी	आदेश:	उदाहरणम्
तिप्	णल् (अ)	बभूव
तस्	अतुस्	बभूवतु:
झि	उस्	बभूवु:
सिप्	थल् (थ)	बभूविथ
थस्	अथुस्	बभूवथु:
थ	अ	बभूव
मिप्	णल्	बभूव
वस्	व	बभूविव
मस्	म	बभूविम

सूत्रार्थसमन्वय - भू ति इस अवस्था में परस्मैपदसंज्ञक तिप् के स्थान पर प्रकृतसूत्र से णलादेश, ल की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर और तस्य लोप: इस सूत्र से ल का लोप होने पर ण इसका अनेकाल्त्व होने से 'अनेकाल्शित् सर्वस्य' इस सूत्र से तिप् के सर्वस्व के स्थान पर णादेश होने पर भू ण यह होता है। यहाँ ण इसकी स्थानिवद्भाव से प्रत्ययसंज्ञा होती है। चुटू इस सूत्र से प्रत्यय के आदि णकार की इत्संज्ञा होती है, और तस्य लोप: इस सूत्र से ण का लोप होता है। तब भू अ यह स्थिति होती है। तब -

14.3 भुवो वुग् लुङ्-लिटो:॥ (६.४.८८)

सूत्रार्थ - लुङ् और लिट्लकार सम्बन्धी अच् वर्ण परे रहते भू धातु से वुक् आगम होता है।

सूत्रव्याख्या - यह सूत्र साक्षात् लक्ष्यसंस्कार रूप होने से विधि सूत्र की कोटि में आता है। इस त्रिपदात्मक सूत्र में भुव:, वुक्, लुङ्लिटो: यह पदच्छेद है। यहाँ भुव: यह भू शब्द का षष्ठ्यन्त

टिप्पणियाँ

रूप है। लुङ्लिटोः यह सप्तमीद्विवचनान्त समस्तपद है। दोनों पद ही उद्देश्यबोधक पद है। लुङ् च लिट् च लुङ्लिटौ यह इतरेतरयोगद्वन्दसमास है, तयोः लुङ्लिटोरिति। वुक् यह प्रथमान्त विधेयसम्पर्क पद है। अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ इस सूत्र से अचि यह सप्तम्यन्त पद यहाँ अनुवर्तित किया गया है। लुङ्लिटोः और अचि यह दोनों पद समविभक्ति के होने से अभेद अर्थबोध को उत्पन्न करता है। किन्तु अचि यह पद लुङ और लिट् दोनों में पृथक रूप से अन्वित होता है। अतः लुङ् सम्बन्धी अच् परे रहते तथा लिट् सम्बन्धी अच् परे रहते यह अर्थ आता है। अङ्गस्य इसका अधिकार है। पदयोजना - लुङ्लिटोः अचि अङ्गस्य भुवः वुक्। अङ्गस्य भुवः ये दोनों पद षष्ठ्यन्त समानविभक्ति वाले हैं। परन्तु यहाँ तदन्तविधि नहीं है। अभेदान्वय होता है। अङ्ग है जो भू उसका यह अर्थ होता है। सूत्रार्थ होता है - लुङ् और लिट्सम्बन्धी अच् परे रहते अङ्गसंज्ञक भू को वुगागम होता है।

वुक् का ककार उच्चारण के लिए है किंतु उकार उच्चारणार्थ है। किन्तु ककार औपदेशिक होने से 'हलन्त्यम्' इस सूत्र से इत्संज्ञक है। अतः वुक् यह आगम 'आद्यन्तौ टकितौ' इस परिभाषा से होने से कित्त्वात् होने से भू शब्द का अंतिम अवयव होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय - भू अ इस स्थिति में लिट्सम्बन्धी अकाररूप में अच् वर्ण परे रहते प्रकृतसूत्र से भू इसको वुक् यह आगम होता है। और वह आगम कित्त्व होने से भूशब्द के अन्त्य ऊकार से परे होता है, और उसका ही अन्त्य अवयव होता है। तब भूव् अ यह होता है। तब -

पाठगत प्रश्न 14.1

1. क्या लट् लकार में परोक्षत्व है?
2. लिट् कब प्रयोग करना चाहिए?
3. तिप् के स्थान पर णल् कैसे सर्वादेश है?
4. भू को वुक् किन लकारों में है?
5. भुवो वुग् लुङ्-लिटोः इस सूत्र से विहित वुक् क्या है-

   1. आगमः 2. आदेशः 3. प्रत्ययः 4. स्थानी

14.4 लिटि धातोरनभ्यासस्य॥ (६.१.८)

सूत्रार्थ - लिट् परे रहते अनभ्यासधात्ववयवस्य एकाचः प्रथमस्य द्वे स्तः, आदिभूतादचः परस्य तु द्वितीयस्य।

सूत्रव्याख्या - छह प्रकार के सूत्रों में यह विधि सूत्र है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में लिटि धातोः अनभ्यासस्य यह पदच्छेद है। वहाँ लिटि यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। और औपश्लेष अधिकरण

सप्तम्यर्थ है। धातोः यह षष्ठ्येकवचनान्त पद है। अवयव अवयवी भावसम्बन्ध से यहाँ षष्ठी विहित है। अतः धातु का अवयव का यह अर्थ है। अनभ्यासस्य यह षष्ठ्येकवचनान्त समस्तपद है। न अभ्यासः अनभ्यासः, तस्य अनभ्यासस्य यह नञ्समास है। अभ्यास संज्ञा से रहित यह उसका अर्थ है। और यह धातोः इसका विशेषण है सप्तमी विभक्ति होने से। एकाचो द्वे प्रथमस्य और अजादेर्द्वितीयस्य यह दोनों सूत्र यहां अधिकार करते हैं। वहां एकाचः यह षष्ठी एकवचनान्त समस्तपद है। एकः अच् यस्य यस्मिन् वा स एकाच्, तस्य एकाचः यह बहुव्रीहिसमास है। और यह धातोः इससे संबंधित है अतः धातु के अवयव एकाच् का यह उसका अर्थ है। प्रथमस्य यह भी षष्ठी एकवचनान्त है, एकाचः इसका विशेषण है। द्वे यह प्रथमान्त विधेयबोधक पद है। अजादेः यह पञ्चम्येकवचनान्त समस्तपद है। अच् चासौ आदिश्च अजादिः यह कर्मधारयसमास है। तस्माद् अजादेः इति। द्वितीयस्य यह षष्ठ्येकवचनान्त पद है। सूत्रगत पदों का अन्वय इस प्रकार है - लिटि अनभ्यासस्य धातोः प्रथमस्य एकाचः द्वे, अजादेः द्वितीयस्य इति। द्वे इससे द्वि का उच्चारण अथवा द्वि का प्रयोग विधान किया जाता है।

सूत्र में दो वाक्य हैं। वह है - प्रथम वाक्य - लिट् परे रहते अभ्यास संज्ञारहित धातु के अवयवभूत के प्रथम एकाच् भाग का द्वित्व होता है।

द्वितीय वाक्य - धातु अनेकाच् तथा अजादि हो तो लिट् परे रहते उस ही धातु के द्वितीय एकाच् भाग का द्वित्व होता है।

यहाँ उत्तर वाक्य में अजादेर्द्वितीयस्य यहाँ द्वितीयस्य इस वचन से धातु में अनेकाच्त्व विशिष्ट होता है। अन्यथा एकाच् धातु में द्वितीय अच् भाग के अभाव होने से द्वितीय का यह वचन व्यर्थ होता।

अतः सूत्रार्थ इस प्रकार होता है - लिट् परे रहते अभ्यास संज्ञारहित धातु के अवयव प्रथम एकाच् का दो बार प्रयोग होता है, आदिभूत अच् के परे का द्वितीय एकाच् भाग का दो बार प्रयोग होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय- भू धातु से लिट्, तिप्, णल् और वुक् आगम करने पर भूव् अ यह स्थिति हुई। धातु की अभ्यास संज्ञा नहीं है। अतः प्रकृतसूत्र से लिट् परे रहते प्रथम अच् भाग का दो बार प्रयोग होता है। उससे भूव् भूव् अ यह होता है। तब -

[**विमर्श** - एकाचः यहाँ बहुव्रीहि ही ग्रहण करने योग्य है। एकश्चासौ अच्च एकाच्, तस्य एकाचः यह कर्मधारय स्वीकार करने पर तो इणादि एकाच् धातुओं का द्वित्व सिद्ध होता है, किन्तु पचादि धातुओं का द्वित्व नहीं होता है। उससे पपाच इत्यादि सिद्ध नहीं होता है। बहुव्रीहि स्वीकार करने में तो इयाय इत्यादि स्थल पर इणादि का द्वित्व व्यपदेशिवद्भाव से सिद्ध होता है, दोष नहीं है। किन्तु अजादेः यहाँ कर्मधारयसमास ही ग्राह्य है। अन्यथा अच् आदिर्यस्य अजादिः, तस्य अजादेः यह बहुव्रीहि स्वीकार करने पर तो इन्द्रीय इस क्यजन्त से सन् परे होकर इन्द्रिद्रीयिषति यह इष्ट रूप सिद्ध नहीं होता।]

टिप्पणियाँ

14.5 पूर्वोऽभ्यासः।। (६.१.४)

सूत्रार्थ - षाष्ठद्वित्व प्रकरण में जो द्वित्व विहित है, उनमें पूर्व की अभ्यास संज्ञा होती है।

सूत्रव्याख्या - शक्तिग्राहक होने से छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह संज्ञासूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। पूर्वः अभ्यासः यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। दोनों ही पद प्रथमैकवचनान्त भी है। इस सूत्र से अभ्यास संज्ञा का विधान होता है। किसकी यह संज्ञा होती है यह आकाङ्क्षा होने पर एकाचो द्वे प्रथमस्य (६.१.१) इस सूत्र से द्वे यह पद अनुवर्तित होता है। और वह द्वयोः इस षष्ठीद्विवचन के रूप में विपरिणमित होता है। यह सूत्र एकाचो द्वे प्रथमस्य इस सूत्र के अधिकार में पढा गया है। अतः इससे दो बार कह गए में पूर्वभाग की अभ्यास संज्ञा विधान की जाती है। द्वयोः पूर्वः अभ्यासः यह अन्वय है। सूत्रार्थ होता है - षाष्ठद्वित्व प्रकरण में जो दो विहित हैं, उनका पूर्वभाग अभ्यास संज्ञक होता है।

अभ्यास संज्ञा का फल अभ्यासे चर्च (८.४.५४), ह्रस्वः (७.४.४९) इत्यादि सूत्रों में स्पष्ट है।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय - भू धातु से लिटि धातोरनभ्यासस्य (६.१.८) से द्वित्व करने पर भूव् भूव् अ यह स्थिति उत्पन्न हुई। यहाँ द्वित्वविधायकसूत्र षाष्ठद्वित्वप्रकरण में विद्यमान है। अतः प्रकृतसूत्र से पूर्वभाग की अभ्यास संज्ञा होती है। तब -

14.6 हलादिः शेषः। ७.४.६०।।

सूत्रार्थ - अभ्यास का आदि हल् ही शेष रहता है, अन्य हल् का लोप होता है।

सूत्रव्याख्या - छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। यह त्रिपदात्मक सूत्र है। हल् आदिः शेषः यह पदच्छेद है। तीनों ही पद प्रथमैकवचनान्त हैं। शिष्यते यह शेषः है। इतरनिवृत्तिपूर्वक अवस्थित अर्थ में विद्यमान शिष् धातु से कर्म में घञ् करने से यह शब्द निष्पन्न है। यहाँ लोपोऽभ्यासस्य इस सूत्र से अभ्यासस्य यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। इस प्रकार अभ्यासस्य आदिः हल् शेषः यह पदयोजना है। अतः सूत्रार्थ होता है- अभ्यास का आदि हल् ही शेष रहता है, अन्य हल् लुप्त होते हैं। शिष् धातु के इतरनिवृत्तिरूप व्यापार से अन्य हलों का अदर्शन होता है यह फलितार्थ कथन है।

सूत्र में हलादिः यहाँ समास नहीं है। इस सूत्र से अभ्यास में विद्यमान हलों में आदि हल् शेष रहता है, अवशेष रहता है, लुप्त नहीं होता है। अन्य में हल् लुप्त होते हैं, अदर्शनतां व्यवहाराभावं गच्छन्ति यह अर्थ है।इस प्रकार इस सूत्र से अभ्यास में विद्यामान अचों के विषय में कुछ भी नहीं कहा गया है। अतः आदि अच् हो अथवा अनादि अच् हो वह लुप्त नहीं होता है, इस सूत्र से। हल् ही इसका विषय है न कि अच्।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय - भूव् भूव् अ इस अवस्था में पूर्वोऽभ्यासः (६.१.४) इस सूत्र से भूव् इस पूर्व की अभ्यास संज्ञा हुई। और तत्पश्चात् प्रकृतसूत्र से अभ्यास संज्ञक भूव् इसके हलों में आदि भकार शेष रहता है, अन्य हल् अर्थात् वकार लुप्त हो जाता है। अभ्यास में जो ऊकार है वह लुप्त नहीं होता है। उससे भू भूव् अ यह होता है। तब -

14.7 ह्रस्वः॥ (७.४.५९)

सूत्रार्थ - अभ्यास के अच् को ह्रस्व हो।

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र है और एकपदात्मक है। ह्रस्वः यह प्रथमान्त विधेयबोधक पद है। सूत्र में उद्देश्य बोधक पद नहीं है। यहाँ लोपोऽभ्यासस्य इस सूत्र से उद्देश्य सम्पर्क अभ्यासस्य यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। इस सूत्र में स्थानी साक्षात् उल्लिखित नहीं है। इस प्रकार ह्रस्वः इस विधेयपरे शब्द को उच्चारित करके अच् विधान किया जाता है। अतः अचश्च इस परिभाषा से यहाँ अचः यह षष्ठ्यन्त पद उपस्थापित होता है। अभ्यासस्य अचः ह्रस्वः यह पदयोजना है। सूत्रार्थ होता है - अभ्यास के अच् को ह्रस्व हो।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय - भू भूव् अ इस अवस्था में प्रकृतसूत्र से अभ्यास संज्ञक भू इसके ऊकार का ह्रस्व उकार करने पर भु भूव् अ यह स्थिति होती है। तब -

14.8 भवतेरः॥ (७.४.७३)

सूत्रार्थ - भू धातु के अभ्यास के उकार का अकार हो,लिट् परे रहते।

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र है। भवतेः अः यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। इस द्विपदात्मक सूत्र में भवतेः यह षष्ठ्यन्त पद है। भवति इसका षष्ठ्येकवचन में यह रूप है। भू धातु यह उसका अर्थ है। इक्शितपौ धातुनिर्देशे इस शास्त्र से धातु के निर्देश के लिए शितप् का प्रत्यय योग होने पर भू धातु का भवतिः यह सुबन्त रूप होता है। उसका ही षष्ठी में यह रूप है। यह स्थान षष्ठी है। अः यह प्रथमान्त विधेय सम्पर्क पद है। व्यथो लिटि इस सूत्र से लिटि यह सप्तम्यन्त पदम अनुवर्तित होता है। यहाँ लोपोऽभ्यासस्य इस सूत्र से अभ्यासस्य यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित हुआ है, इस प्रकार लिटि भवतेः अभ्यासस्य अः ये सूत्रगत पदों का अन्वय है। यहाँ अभ्यासस्य यह अल् समुदाय बोधक होने से स्थान षष्ठी सुना जाता है। अतः अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से भू धातु के अभ्यास के अन्त्य अल् के स्थान पर ही अकार होता है। यहाँ अन्त्य अल् उकार ही है।इस प्रकार अर्थ प्राप्त होता है - लिट् संज्ञक प्रत्यय परे हो तो भू धातु के अभ्यास उवर्ण का अकार होता है, यह सूत्रार्थ है।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय - भू धातु से लिट्, तिप्, णल्, वुकागम, आदि अवयव का द्वित्व, अभ्यास संज्ञा और अभ्यास कार्य होने पर भु भूव् अ यह स्थिति हुई। यहाँ णल् यह लिट् संज्ञक प्रत्यय पर में है। अतः प्रकृतसूत्र से भू धातु के अभ्यास उकार के स्थान पर अकारादेश होता है। अतः भ भूव् अ यह स्थिति होती है। तब -

14.9 अभ्यासे चर्च॥ (८.४.५३)

सूत्रार्थ - अभ्यास में झलों को चर् और जश् हो। झशों को जश् और खयों को चर् हो यह विवेक है।

टिप्पणियाँ

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। अभ्यासे चर् च यह सूत्रगत पदच्छेद है। अभ्यासे यह सप्तम्यन्त पद है। चर् यह प्रथमान्त पद है। चर् यह प्रत्याहार है। वर्ग के प्रथम वर्ण और श् ष् स् ये उसके वाच्य हैं। च यह अव्ययपद है। झलां जश् झशि इस सूत्र से झलाम् यह षष्ठ्यन्त पद और जश् यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित है। झल् यह प्रत्याहार है। अतः अभ्यासे झलां जश् चर् च यह सूत्रगत पदान्वय है। अतः सूत्र का अर्थ होता है अभ्यास में झलों के स्थान पर चर् और जश् होते हैं।

विशेष - यहाँ झल् प्रत्याहारस्थ वर्णों के स्थान पर चर् प्रत्याहारस्थ वर्ण और जश् प्रत्याहारस्थ वर्ण विधान किए जाते हैं। झल् प्रत्याहार में चौबीस वर्ण हैं, तथा जश् प्रत्याहार में और चर् प्रत्याहार में मिलाकर दश वर्ण हैं। इस प्रकार स्थानी चौबीस और आदेश दस ही हैं। वहाँ झश् प्रत्याहारस्थ वर्णों के स्थान पर जश् प्रत्याहारस्थ वर्ण हो।और खय् प्रत्याहारस्थ वर्णों के स्थान पर चर् प्रत्याहारस्थ वर्ण हो।और यह स्थानेऽन्तरतमः इस परिभाषा से यत्नों का आन्तरतम्य परीक्षण करके ही निर्णय लिया गया है। तत्र खय् प्रत्याहारस्थ वर्णों का बाह्यप्रयत्न हैं - विवार, श्वास और अघोष। चर् प्रत्याहारस्थ वर्णों के भी उसी प्रकार प्रयत्न किए गये हैं। इस प्रकार झश् प्रत्याहारस्थ वर्णों के स्थान पर जश् प्रत्याहारस्थ वर्ण विधान किए जाते हैं, बाह्यप्रयत्न के आन्तरतम्य के अनुसार।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय - भू धातु से लिट्, तिप्, णल्, द्वित्व, अभ्यास संज्ञा और ह्रस्वादि कार्य होने पर भ भूव् अ इस स्थिति में अभ्यास झल् के स्थान पर चर् और जश् आदेश होता है। यहाँ प्रकृतसूत्र से झश् के भकार के स्थान पर स्थानेऽन्तरतमः इस परिभाषा बल से स्थानों आन्तर्य से जश् बकार आदेश होता है। और बभूव यह रूप सिद्ध होता है।

भू धातु से लिट् के विधान से आरम्भ करके बभूव इस रूप निष्पत्ति तक बहुत विधिसूत्र, संज्ञासूत्र और परिभाषासूत्र प्रवर्तित हुए हैं। उनमें बहुत से सूत्र यहाँ से पूर्व में उपन्यस्त हैं। कुछ पूर्वप्रकरणों में हैं। और कुछ दसवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक में हैं। अतः सभी सूत्रों का समावेश होने पर समग्र रूप कैसे सिद्ध होता है, यह एकत्रित करके प्रदर्शित किया गया है। इस प्रकार रूप से अन्य रूपों में जिन सूत्रों की आवश्यकता हो, उनको स्थल देखकर छात्र के द्वारा स्वयं प्रयोग करना चाहिए। जिस क्रम से बभूव इस रूप को सिद्ध करने के लिए सूत्रों की आवश्यकता हुई, उसी क्रम से अन्यत्र भी सूत्र प्रवर्तित हो, ऐसा तो नहीं होता है। सभी जगह क्रम भिन्न हो सकता है। अतः सकल रूपों की सिद्धि छात्र के द्वारा स्वयं समझकर करनी चाहिए।

यहाँ बभूव इसकी प्रक्रिया नीचे प्रदर्शित करते हैं -

तिङन्त में रूपसाधन में कुछ विभाग हैं। यथा -

१) धातुपरिचय, २) लकारविधान, लकार के स्थान पर तिङ आदि विधान, ३) तिङ आदेशविधान, विकरणविधान, ४) सन्धि, अभ्यासादि कार्य, लोपादि इस प्रकार के कार्य, ५) विसर्गादिविधान। इस प्रकार क्रम से नीचे रूप प्रदर्शित करते हैं।

बभूव

१. **धातुपरिचय** - सत्ता अर्थ में वर्तमान भ्वादिगण में पठित होने से भूवादयो धातव इस सूत्र से धातुसंज्ञक अकर्मक सेट् भू यह धातु है।

२. **लकारविधान, लकार के स्थान पर तिप् आदि विधान** - भूधात्वर्थ सत्ता क्रिया की भूतानद्यतनपरोक्ष में वृत्तित्वविवक्षा होने पर परोक्षे लिट् इस सूत्र से भू धातु से विवक्षा होने पर कर्ता में लिट्, अनुबन्धलोप होने पर भू ल् यह होने पर, ल के स्थान पर तिप्तस्झि-सिप्थस्थ-मिब्वस्मस्-तातांझ-थासाथांध्वम्-इड्वहिमहिङ् इस सूत्र से अष्टादश लादेशों में भू धातु से आत्मनेपद निमित्तहीन होने से शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् इस सूत्र से तिप् आदि नौ प्रत्ययों में से मध्यम और उत्तम का अविषय होने से और कर्ता के एकत्व होने से प्रथमपुरुषैकवचन की विवक्षा में तिप्, अनुबन्धलोप होने पर भू ति यह स्थिति होती है।

३. **तिप् आदेशविधान, विकरणविधान** - प्रत्ययाधिकार में विहित तिप् प्रत्ययसंज्ञक होता है। परस्मैपदानां णलतुसुस्-थलथुस-णल्वामाः इस सूत्र से तिप् के स्थान पर सर्वादेश णल् होकर अनुबन्धलोप होने परे भू ण इस स्थिति में तिप् के प्रत्यय होने के कारण ण का भी स्थानिवद्भाव से प्रत्ययत्व होने से चुटू इस सूत्र से प्रत्यय के आद्य णकार की इत्संज्ञा होने पर और तस्य लोपः इससे लोप करने पर भू अ यह स्थिति होती है। तत्पश्चात् अजादि लिडादेश अप्रत्यय प्रत्यय पर में होने से भुवो वुग् लुङ्लिटोः इस सूत्र से वुगागम, अनुबन्धलोप, कित्त्व होने से आद्यन्तौ टकितौ इस परिभाषा से अन्त्यावयव होकर भूव् अ यह स्थिति होती है।

४. **सन्धि, अभ्यासादिकार्य, लोपादि इस प्रकार के कार्य** - लिटि धातोरनभ्यासस्य इस सूत्र से अनभ्यास धातु के अवयव एकाच् के आगम सहित भूव् इस समुदाय का द्वित्व होने पर भूव् भूव् अ यह होने पर द्विरुक्त के पूर्वभाग भूव् इसकी पूर्वोऽभ्यासः इस सूत्र से अभ्यास संज्ञा होती है। तब हलादिः शेषः इस सूत्र से अभ्यास के आदि हल् के शेष रहने पर भू भूव् अ यह स्थिति होती है। तत्पश्चात् ह्रस्वः इस सूत्र से अभ्यास के अच् ऊकार के ह्रस्व होने पर भु भूव् अ इस स्थिति में भवतेरः इस सूत्र से अभ्यास उकार का अकार होने पर भ भूव् अ यह स्थिति होती है। तत्पश्चात् अभ्यासे चर्च इस सूत्र से अभ्यास भकार के स्थान पर आन्तर्य से बकार होने पर बभूव् अ होने पर वर्णसम्मेलन होकर बभूव यह रूप सिद्ध होता है।

बभूवतुः - (सभी रूपसिद्धियों में कुछ सामान्य विषय होते हैं। जैसे धातुपरिचय आदि। अतः वह पुनः पुनः नहीं प्रदर्शित किया जा रहा है। परीक्षादि में छात्र के द्वारा वह स्वयं समझकर लिखने योग्य है यह आशा है।)

(१+२+३) - भू धातु से परोक्षे लिट् इस सूत्र से लिट्, ल के स्थान पर प्रथमपुरुषद्विवचन विवक्षा में तस, भू तस् इस स्थिति में परस्मैपदानां णलतुसुस्-थलथुस-णल्वामाः इस सूत्र से तस् के स्थान पर सर्वादेश अतुस् होने पर भू अतुस् यह स्थिति होती है। तत्पश्चात् अजादि लिडादेश अतुस् प्रत्यय पर में रहते भुवो वुग् लुङ्लिटोः इस सूत्र से वुगागम्, कित्त्व होने से अन्तावयव होने पर अनुबन्धलोप

टिप्पणियाँ

होकर भूव् अतुस् यह स्थिति होती है।

४. तत्पश्चात् लिटि धातोरनभ्यासस्य इस सूत्र से अनभ्यास धातु के अवयव एकाच् आगम सहित भूव् इस समुदाय का द्वित्व होने पर भूव् भूव् अतुस् यह होने पर द्विरुक्त के पूर्वभाग भूव् इसका पूर्वोऽभ्यासः इस सूत्र से अभ्यास संज्ञा होने पर हलादिः शेषः इस सूत्र से अभ्यास का आदि हल् शेष रहने पर भू भूव् अतुस् यह होने पर ह्रस्वः इस सूत्र से अभ्यास के अच् ऊकार के ह्रस्वत्व होने से भु भूव् अतुस् इस स्थिति में भवतेरः इस सूत्र से अभ्यास के उकार का अकार होने पर भ भूव् अतुस् यह स्थिति होती है। तब अभ्यासे चर्च इस सूत्र से अभ्यास के भकार के स्थान पर आन्तर्य से बकार होने पर बभूव् अतुस् यह स्थिति होती है।

५. **विसर्गादि का विधान** - बभूव् अतुस् इस समुदाय की तिङन्ततव होने से सुप्तिङन्तं पदम् इस सूत्र से पदसंज्ञा होने पर ससजुषो रुः इससे पदान्त सकार के रुत्व,अनुबन्धलोप होने पर ब भूव् अतुस् यह होने पर, अवसान पर में रहते खरवसानयोर्विसर्जनीयः इस सूत्र से पदान्त रेफ के विसर्ग होने पर ब भूव् अतुः यह होने पर वर्णसम्मेलन करने पर बभूवतुः यह रूप सिद्ध होता है।

सभी स्थलों पर सभी सूत्रों का प्रयोग करके सभी रूपों की सिद्धि विस्तार भय से विस्तारपूर्वक प्रदर्शित नहीं की गई हैं।

बभूवुः - भू धातु से परोक्षे लिट् इस से कर्ता में लिट्, प्रथमपुरुषबहुवचन विवक्षा में झि प्रत्यय, भू झि यह होने पर परस्मैपदानां णलतुसुस्-थलथुस-णल्वामाः इस सूत्र से झि के स्थान पर सर्वादेश उस् करने पर भू उस् यह स्थिति होती है। तब अजादि लिडादेश उस् प्रत्यय पर में रहते भुवो वुग् लुङ्लिटोः इस सूत्र से वुगागम होने पर कित्त्व होने से अन्तावयव होकर अनुबन्धलोप होने पर भूव् उस् यह स्थिति होती है।

तत्पश्चात् लिटि धातोरनभ्यासस्य इस सूत्र से भूव् इस समुदाय के द्वित्व होने पर भूव् भूव् उस् इस स्थिति में द्विरुक्त के पूर्वभाग भूव् इसकी पूर्वोऽभ्यासः इस सूत्र से अभ्यास संज्ञा होने पर हलादिः शेषः इस सूत्र से अभ्यास के आदि हल् शेष रहते भू भूव् उस् यह होता है। उसके बाद ह्रस्वः इस सूत्र से अभ्यास के अच् ऊकार का ह्रस्वत्व होने पर भु भूव् उस् इस स्थिति में भवतेरः इस सूत्र से अभ्यास उकार के स्थान पर अकार होकर भ भूव् उस् इस स्थिति में अभ्यासे चर्च इस सूत्र से अभ्यास भकार के बकार होने पर बभूव् उस् यह होता है। पदान्तसकार के रुत्व,अनुबन्धलोप होने पर और रेफ का विसर्ग करने पर वर्णसम्मेलन होकर बभूवुः यह रूप सिद्ध होता है।

बभूविथ - भू धातु से परोक्षे लिट् इस सूत्र से कर्ता में लिट्, भू ल् यह होने पर ल के स्थान पर मध्यमपुरुषैकवचन विवक्षा में सिप्, अनुबन्धलोप होने पर भू सि इस स्थिति में परस्मैपदानां णलतुसुस्-थलथुस-णल्वामाः इस सूत्र से सिप् के स्थान पर सर्वादेशे थल् होने पर, अनुबन्धलोप होने पर भू थ यह होता है। तब -

14.10 आर्धधातुकस्येड् वलादेः॥ (७.२.३५)

सूत्रार्थ - वलादि आर्धधातुक को इडागम हो।

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। आर्धधातुकस्य इट् वलादेःयह सूत्रगत पदच्छेद हैं। आर्धधातुकस्य और वलादेः ये दोनों पद षष्ठ्येकवचनान्तं पद है। इट् यह प्रथमान्त पद है। वलादेः आर्धधातुकस्य इट् यह सूत्रगत पदों का अन्वय है। अतः वलादि आर्धधातुक को इडागम होता है यह सूत्रार्थ है। इट् के टकार की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञां प्राप्त होती है। तत्पश्चात् तस्य लोपः इस सूत्र से उसका लोप होता है। अतः यह इडागम टित् है। उससे आद्यन्तौ टकितौ इस परिभाषा से यह (इट्) आगमी का आद्य अवयव होता है।

उदाहरण - बभूविथ।

सूत्रार्थसमन्वय - पूर्व में आए सूत्रों के अनुसार भू धातु से लिट्, सिप्, थल्, अनुबन्धलोप होने पर भू थ यह स्थिति हुई। वहाँ थल् लिडादेश सिप् के स्थान पर विहित हुआ है। और लिट् च इस सूत्र से सिप् की आर्धधातुक संज्ञा होती है। उसके स्थान पर विहित थल् की भी तिङ्भिन्न और शिद्भिन्न होने से आर्धधातुकं संज्ञा होती है। थल् का आदिवर्ण वल है। अतः थल् वलादि है। इस प्रकार थल् के आर्धधातुक और वलादि होने से प्रकृत सूत्र से इडागम होता है। वह इडागम आर्धधातुकस्य इस षष्ठी से आर्धधातुक को उद्देश्य कर विहित है। अतः वह थल् का आद्यावय होता है।। तत्पश्चात् भू इथ यह स्थिति होती है। उसके बाद भुवो वुग् लुङ्लिटोः इस सूत्र से वुगागम, अन्त्यावयव होने पर भूव् इथ यह होने पर लिटि धातोरनभ्यासस्य इस सूत्र से द्विरुक्त के पूर्वभाग भूव् इसका पूर्वोऽभ्यासः इस सूत्र से अभ्यास संज्ञा होने पर हलादिः शेषः इस सूत्र से अभ्यास के आदि हल् के शेष रहने पर भू भूव् इ थ इस स्थिति में ह्रस्वः इस सूत्र से अभ्यास के अच् ऊकार का ह्रस्वत्व होने पर भु भूव् इ थ यह होने पर भवतेरः इस सूत्र से अभ्यास के उकार का अकार होने परभ भूव् इ थ इस स्थिति में अभ्यासे चर्च इस सूत्र से अभ्यास भकार के स्थान पर बकार होने पर बभूव् इ थ में वर्णसम्मेलन होने पर बभूविथ यह रूप सिद्ध होता है।

बभूवथुः - भू धातु से लिट्, मध्यमपुरुषद्विवचन की विवक्षा में थस्, उसको अथुस् आदेश होने पर अभ्यासकार्य, रुत्व, और विसर्ग होने पर बभूवथुः यह रूप सिद्ध होता है।

बभूव - भू धातु से लिट् मध्यमपुरुषबहुवचन विवक्षा में थ प्रत्यय होने पर, उसके स्थान पर अ आदेश होने पर अभ्यास कार्य में बभूव यह रूप सिद्ध होता है।

बभूव - भू धातु से लिट् लकार में उत्तमपुरुषैकवचन विवक्षा होने पर मिप्, उसको णलादेश व अभ्यास कार्य होने पर बभूव यह रूप सिद्ध होता है।

बभूविव - भू धातु से लिट् उत्तमपुरुष द्विवचन की विवक्षा होने पर वस् प्रत्यय, उसके स्थान परे व यह आदेश, अभ्यासकार्य, वप्रत्यय को आर्धधातुक होने से और वलादित्व होने से इडागम होने पर बभूविव यह रूप सिद्ध होता है।

बभूविम - भू धातु से लिट्, उत्तमपुरुषद्विवचन की विवक्षा में मस्, उसके स्थान पर म यह आदेश, अभ्यासकार्य, में प्रत्यय का आर्धधातुक और वलादि होने से इडागम होने पर बभूविम यह रूप सिद्ध होता है।

भू धातु के लिट् लकार में रूप -

लिट्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
मध्यमपुरुषः	बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
उत्तमपुरुषः	बभूव	बभूविव	बभूविम

पाठगत प्रश्न 14.2

1. धातु के द्वित्व विधायक सूत्र को लिखिए।
2. किसकी अभ्यास संज्ञा होती है?
3. हलादि शेष किसका होता है?
4. ह्रस्वः इस सूत्र से किसका ह्रस्व होता है?
5. लिट् परे होने पर भू धातु के अभ्यास के ऊकार का ह्रस्व किस सूत्र से होता है?
6. भवतेरः किसका होता है?
7. भवतेरः किस लकार में होता है?
8. अभ्यासे चर्च, अन्यच्च क्या है और किसका है?
9. वलादि आर्धधातुक को इट् किस सूत्र से होता है?

भू धातु के लुट् में लकार रूप

14.11 अनद्यतने लुट्॥ (३.३.१५)

सूत्रार्थ - भविष्यत् अनद्यतन अर्थ में धातु से लुट् हो

सूत्रव्याख्या - यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। अनद्यतने (७/१), लुट् (१/१)। अविद्यमानो अद्यतनः कालः सः अनद्यतनः। तस्मिन् यह बहुव्रीहिसमास है। प्रत्ययः परश्च इन दोनों सूत्रों का यहाँ अधिकार है। प्रत्ययाधिकार में पठित होने से लुट् यह प्रत्यय है। धातोः यह पञ्चम्यन्त पद अधिकृत है। भविष्यति गम्यादयः इस सूत्र से भविष्यति यह पद अनुवर्तित होता है। अनद्यतने भविष्यति धातोः लुट् प्रत्ययः परः यह वाक्य योजना है। अतः सूत्रार्थ होता है- अनद्यतन भविष्यत् अर्थ वाली धातु से लुट् प्रत्यय परे हो। अर्थात् जिस धातु का अर्थ व्यापार अनद्यतन भविष्यत्काल में हो ऐसी विवक्षा होने पर धातु से लुट् विधान किया जाता है।

उदाहरण - भू धातु का अर्थ सत्ता है। और उससे अनद्यतन भविष्यत्काल यह विवक्षा हो तो भू धातु से अनद्यतने लुट् इस आलोच्यमान सूत्र से लुट् विवक्षा से कर्ता में विधान होता है। तत्पश्चात् उकार और टकार की इत्संज्ञा होने, लोप होने पर भू ल् इस स्थिति में ल के स्थान पर अट्ठारह आदेशों में से भू धातु से आत्मनेपद निमित्तहीन होने से प्रथमपुरुषैकवचन विवक्षा होने से तिप्, अनुबन्धलोप होने पर भू ति यह स्थिति होती है। तब-

14.12 स्यतासी लृलुटोः॥ (३.१.३३)

सूत्रार्थ - धातु से स्य और तासि ये दोनों प्रत्यय हो, लृ और लुट् पर में रहते।

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से स्य तासि ये दोनों विधान किए जाते हैं। इस सूत्र में दो पद हैं। स्यतासि (१/२), लृ-लुटोः (७/२)। स्यः च तासिश्च स्यतासी यह इतरेतरयोगद्वन्द्वसमास है। तासि यहाँ इकार उच्चारण सौकर्य के लिए है। ला च लुट् च लृलुटौ, तयोः लृलुटोः यह इतरेतरयोगद्वन्द्वसमास है। निरनुबन्धकग्रहणे सानुबन्धकस्य इस परिभाषा से लृ इससे लृट् लृङ् इन दोनों का भी ग्रहण होता है। प्रत्ययः परश्च ये दोनों सूत्र अधिकार करते हैं। धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ् इस सूत्र से धातोः यह पञ्चम्यन्त पद आता है, द्विवचनान्त रूप से विपरिणाम होता है। तब पद योजना होती है - धातोः स्यतासी प्रत्ययौ परौ लृटि लृङि लुटि। स्य तास् चेति द्वौ, लृ-लुटौ इति निमित्ते द्वे। अतः यथासंख्यमनुदेशः समानाम् इस परिभाषा से लृ पर में रहते स्यप्रत्यय होता है, लुट् पर में रहते तास् प्रत्यय होता है। यहाँ स्थानी तथा आदेश में यथासंख्य नहीं है। सदा स्थानी और आदेश में ही यथासंख्य नहीं होता है यह यहाँ गम्य होता है। सूत्रार्थ होता है - धातु से स्य प्रत्यय हो लृट् और लृङ् पर में रहते। धातु से तास् प्रत्यय हो लुट् परे रहते।

धातु से परे कर्ता अर्थ में लुट् का विधान होता है। वहाँ उसके स्थान पर तिङ् विधान किया जाता है। तिङ् तिङ्शित् सार्वधातुकम् इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञक है। अतः धातु से कर्ता अर्थ में सार्वधातुक परे में रहते कर्तरि शप् इस सूत्र से शप् प्रसक्त होता है। इस प्रकार अन्य गणों में श्यन् श, श्नु, श्नम्, उ, श्ना इत्यादि भी प्रसक्त होते हैं। परन्तु प्रकृतसूत्र से विहित स्य और तासि इनके अपवाद हैं। और स्य और तासि ही होते हैं।

उदाहरण - भविता।

सूत्रार्थसमन्वय - पूर्व में सूत्र में कहे गए रूप से भू ति यह स्थिति हुई। उसके बाद भू धातु से लुट् के स्थान पर तिप् परे में रहते तिप् तिङशित् सार्वधातुकम् इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञक है। अतः भू धातु से कर्ता अर्थ में सार्वधातुक परे में रहते कर्तरि शप् इस सूत्र से शप् प्रसक्त होता है। परन्तु प्रकृतसूत्र से विहित तास् शप् का अपवाद है। अतः शप् को बांधकर तासि प्रत्यय होने पर भू तासि ति यह स्थिति होती है। तासि तिङ नहीं है, शित् नहीं है, धातोः यह विहित है। अतः आर्धधातुकं शेषः इस सूत्र से उसकी आर्धधातुकसंज्ञा होती ह। और तासि वलादि है। अतः आर्धधातुकस्येड् वलादेः इस सूत्र से इडागम होने पर टित्त्व होने से तासि का आद्यावयव होने पर भू इतास् स्थिति हुई। यदागमपरिभाषा से इतास् यह आगमसहित समुदाय ही प्रत्यय है। और वह आर्धधातुकसंज्ञक है। आर्धधातुक पर में रहते सार्वधातुकार्धधातुकयोः इस सूत्र से इगन्ताङ्ग भू के

टिप्पणियाँ

ऊकार के स्थान पर स्थान आन्तर्य से गुण ओकार होने पर भो इतास् ति यह स्थिति होती है। तब इतास् इसके अच् इकार पर में रहते एचोऽयवायावः इस सूत्र से अवादेश होने पर भव् इतास् ति अवस्था उत्पन्न हुई। तब -

14.13 लुटः प्रथमस्य डारौरसः॥ (२.४.८५)

सूत्रार्थ - लुट् के प्रथम के स्थान पर डा रौ रस् ये क्रम से हो।

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से डा, रौ, रस् का विधान होता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। यहाँ लुटः (६/१), प्रथमस्य (६/१), डारौरसः (१/३)। तब वाक्य योजना होती है - लुटः प्रथमस्य डारौरसः इति। उसके बाद सूत्र का अर्थ होता है- लुट् के स्थान पर विहित प्रथमपुरुषसंज्ञक प्रत्ययों के स्थान पर डा रौ रस् ये क्रम से होते हैं।

तिप् तस्-झि ये परस्मैपदसंज्ञक तीन हैं, त-आताम्-झ ये आत्मनेपदसंज्ञक तीन हैं। इस प्रकार मिलाकर छः प्रत्यय होते हैं। डा-रौ-रसः यह प्रथमाबहुवचनान्त पद है। डा-रौ-रसः च डा-रौ-रसः च यहाँ एकशेष होने पर डा-रौ-रसः यह पद निष्पन्न होता है। अतः उसमें छः प्रत्यय हैं। अतः यथासंख्यमनुदेशः समानाम् इस परिभाषा के बल से तिप्-तस्-झि इनके स्थान पर क्रमशः डा-रौ-रस् यह होते हैं इस प्रकार त-आताम्-झ इनके स्थान पर डा-रौ-रस् ये क्रमशः होते हैं।

तिप्-तस्-झि इनके स्थान पर डा-रौ-रस् यह विधान किए जाते हैं। जब तक डा-रौ-रस् ये तिप् आदि का स्थानग्रहण करते हैं तब तक तिप् आदि के धर्म डा-रौ-रस् इन पर आरोपित नहीं होते हैं। अत एव डा-रौ-रस् इनकी प्रत्ययसंज्ञा भी उनके प्रयोग से उत्तर ही है। अतः जब तक डा तिप् की निवृत्ति नहीं करता है तब तक डा प्रत्यय नहीं है। प्रत्यय नहीं है तो चुटू इस सूत्र से उसके आदि डकार की इत्संज्ञा नहीं होती है। अतः प्रयोग से पूर्व डा इसका अनेकाल्त्व है। अतः अनेकाल्शित् सर्वस्य इस सूत्र से सम्पूर्ण तिप् के स्थान पर ही आदेश डा होता है न कि अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से अन्त्य का। इस प्रकार उन उन प्रत्ययों में जानने योग्य है।

उदाहरण - पूर्वसूत्रोक्त प्रकार से भव् इतास् ति यह होता है। वहाँ लुट् के स्थान पर विहित तिप् प्रथमसंज्ञक है। तिप् के स्थान पर यथासंख्यमनुदेशः समानाम् इस परिभाषा से प्रकृतसूत्र से डा-आदेश होने पर अनेकाल्शित् सर्वस्य इस सूत्र से सर्वादेश होने पर भव् इतास् डा इस स्थिति में चुटू इस सूत्र से प्रत्यय के आदि डकार की इत्संज्ञा होने पर और तस्य लोपः से लोप करने पर भव् इतास् आ यह स्थिति होती है।

तिप् प्रत्यय है। उसके स्थान पर विहित डा भी स्थानिवद्भाव से प्रत्ययसंज्ञक है। स्वादि में, कप्-प्रत्ययावधि में से ही पर पूर्व की भसंज्ञा होती है। डा स्वादि में नहीं है। अतः डा-प्रत्यय पर में रहते भसंज्ञा नहीं होती है। फिर भी पाणिनीमुनि ने डा इसका डित्त्व किया है। उससे यह ज्ञात होता है कि जो भ संज्ञक नहीं है,उसका भसंज्ञक टि का लोप होता है। उसको कहा जाता है डित्त्वसामर्थ्य से अभसंज्ञक की टि का लोप। डि-प्रत्यय पर में रहते इतास् इसकी आस् टि है। उसका लोप होने पर भव् इत् आ यह स्थिति होती है। तब वर्ण मेलन करने से **भविता यह रूप सिद्ध होता है।**

भवितारौ - पूर्व के समान भू धातु से कर्ता में लुट् होने पर प्रथमपुरुषद्विवचन की विवक्षा में तस् प्रत्यय होने पर भू तस् इस स्थिति में कर्तरि शप् इससे शप् प्रसक्त होने पर स्यतासी लृलुटो: इस सूत्र से शप् को बाधकर तास् प्रत्यय होने पर भू तास् तस् यह स्थिति होती है, तत्पश्चात् तास् के आर्धधातुक होने से और वलादि होने से आर्धधातुकस्येड् वलादे: इस सूत्र से इडागम आद्यावयव होने पर भू इतास् तस् इस स्थिति में सार्वधातुकार्धधातुकयो: इस सूत्र से भू के ऊकार का गुण ओकार होने पर भो इतास् तस् इस स्थिति में एचोऽयवायाव: सूत्र से अवादेश होने पर भवितास् तस् यह हुआ।तब लुट: प्रथमस्य डा-रौ-रस: इस सूत्र से तस् के स्थान पर रौ यह सर्वादेश होकर भवितास् रौ यह अवस्था हुई।। तब- (रि च इस सूत्र से देखना चाहिए)

14.14 तासस्त्योर्लोप: (७.४.५०)

सूत्रार्थ - तास् और अस्ति के स का लोप स हो सादि प्रत्यय परे में रहते।

सूत्रव्याख्या - **यह विधि सूत्र है।** इसमें दो पद हैं। तासस्त्यो: लोप: यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। तासस्त्यो: (६/२), लोप: (१/१)। तास् च अस्तिश्च तासस्ती। तयो: तासस्त्यो: यह इतरेतरयोगद्वन्द्वसमास है। अङ्गस्य इसका अधिकार है। प्रत्यय परे में होने पर ही अङ्गसंज्ञा उपपन्न होती है। अत: प्रत्यये यह सप्तम्यन्त पद आक्षिप्त होता है। यह अङ्गाक्षिप्तम् यह कहा जाता है। स: स्यार्धधातुके इस सूत्र से सि यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। तब तासस्त्यो: लोप: सि प्रत्यये यह वाक्ययोजना है। इस सूत्र में तदादिविधि होती है। सि यह अल्बोधक पद प्रत्यये इसका विशेषण है। अत: तदादिविधि से 'सादौ प्रत्यये' यह अर्थ प्राप्त होता है। तास्त्यो: यहाँ षष्ठ्यर्थ सम्बन्ध की अनुयोगिविरह से स्थानषष्ठी है। और वह अल्समुदायबोधक से सुना जाता है। और आदेश लोपात्मक है। अत: अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा के बल से तास् इसके अस् और इसके अन्त्य अल् सकार का लोप होता है यह अर्थ प्राप्त होता है। इस प्रकार सूत्र का अर्थ होता है - सकारादि प्रत्यय परे में होने पर तास् और अस्ति के सकारस्य का लोप होता है।

उदाहरण - इसका उदाहरण भवितासि है। परन्तु प्रकृत में भवितारौ यह रूपसाधन प्रचलित है। और इसके बाद में भवितार: यह रूप होता है। यहाँ दो रूप होने पर भी यह सूत्र प्रवर्तित नहीं होता है। फिर भी रि च यह सूत्र अष्टाध्यायी में इस सूत्र से बाद में है। इस प्रकार यदि रूप का क्रम से ही इसका उपस्थापन करना चाहिए तो रि च इस सूत्र से अव्यवहित पर में ही इसका उपस्थापन हो। अत: अष्टाध्यायी क्रम का आदर करके पूर्व में रखा गया है।

14.15 रि च।। (७.४.५१)

सूत्रार्थ - तास् और अस्ति के सकार का लोप हो रादि प्रत्यय पर में रहते।

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से सकार के लोप का विधान होता है। इस सूत्र में दो पद है। रि (७/१), च यह अव्ययपद है। तासस्त्योर्लोप: इस सूत्र से तासस्त्यो: यह षष्ठीद्विवचनान्त पद अनुवर्तित है। और लोप: यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित है। तास् च अस्तिश्च तासस्ती। तयो: तासस्त्यो: यह इतरेतरयोगद्वन्द्वसमास है। अङ्गस्य इससे अधिकार किया गया है। प्रत्यय पर में ही

टिप्पणियाँ

अङ्गसंज्ञा उपपन्न हुई है। अतः प्रत्यये यह सप्तम्यन्त पद आक्षिप्त होता है। यह अङ्गाक्षिप्त यह कहलाता है। तब पदयोजना होती है - तासस्त्योः रि प्रत्यये च लोपः। रि यह अल्बोधक पद प्रत्यये इसका विशेषण है। अतः तदादिविधि से श्रादौ प्रत्ययेश यह अर्थ प्राप्त होता है। तास्त्योः यहाँ षष्ठ्यर्थ सम्बन्ध का अनुयोगिविरह से स्थानषष्ठी है। और वह अल्समुदायबोधक से सुना जाता है। और आदेश लोपात्मक है। अतः अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा बल से तास् इसके अस् इसका और अन्त्य अल् सकार का लोप होता है यह अर्थ प्राप्त होता है। अतः सूत्रार्थ होता है - रेफादि प्रत्यय पर में रहते तास् और अस्ति के सकार का लोप होता है।

उदाहरण - भवितारौ।

सूत्रार्थसमन्वय - लुटः प्रथमस्य डा-रौ-रसः इस सूत्रोक्त रूप से भवितास् रौ यह स्थिति होने पर रौ यह रादिप्रत्यय पर में है। अतः तास् इसका अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से अन्त्य स का लोप रि च इस प्रकृतसूत्र से होता है। तब भवितारौ यह रूप निष्पन्न होता है।

भवितारः - पूर्ववत् भू धातु से लुट्, प्रथमपुरुषबहुवचन विवक्षा में झि प्रत्यय होने पर भू झि यह होने पर कर्तरि शप् इस सूत्र से शप् प्रसक्त होने पर स्यतासी लृलुटोः इस सूत्र से शप् को बाधकर तास् प्रत्यय होने पर भू तास् झि इस स्थिति में आर्धधातुकस्येड् वलादेः इस सूत्र से इडागम होने पर भू इतास् झि इस स्थिति में सार्वधातुकार्धधातुकयोः इस सूत्र से भू के ऊकार का गुण ओकार होने पर भो इतास् झि इस स्थिति सें एचोऽयवायावः इस सूत्र से अवादेश होने पर भवितास् झि यह होने पर लुटः प्रथमस्य डा-रौ-रसः इस सूत्र से झि के स्थान पर रस् यह सर्वादेश होने पर भवितास् रस् यह अवस्था हुई। यहाँ रादिप्रत्यय पर में है। अतः तास् इसके अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से अन्त्य स का लोप रि च इस प्रकृतसूत्र से होता है। तब भवितारस् इस स्थिति में पदान्तत होने से रूत्व, विसर्ग होने पर भवितारः यह रूप निष्पन्न होता है।

भवितासि - पूर्ववत् भू धातु से लुट्, मध्यमपुरुषैकवचन विवक्षा में सिप् प्रत्यय, अनुबन्धलोप होने पर भू सि यह होने पर प्राप्त शप् को बाधकर स्यतासी लृलुटोः इस सूत्र से तासि प्रत्यय होने पर भू तास् सि इस स्थिति में इडागम होने पर भू के ऊकार का गुण ओकार होने पर भो इतास् सि इस स्थिति में अवादेश होने पर भवितास् सि यह होता है। यहाँ सादिप्रत्यय पर में है। अतः तास् इसके अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से अन्त्य स का लोप तासस्त्योर्लोप इस सूत्र से होता है। तब भवितासि यह रूप निष्पन्न होता है।

भवितास्थः - (यहाँ प्रक्रिया के अनेक अंश पूर्व के समान करने योग्य है।) भू धातु से लुट्, थास्, तास् प्रत्यय, इडागम, ऊकार का गुण ओकार, ओकार को अवादेश होने पर भवितास् थस् इस स्थिति में समुदाय के पदान्त होने से रूत्व और विसर्ग करने पर भवितास्थः यह रूप सिद्ध होता है।

भवितास्थ - (यहाँ प्रक्रिया के अनेक अंश पूर्व के समान करने योग्य है।) भू धातु से लुट्, थ, तास् प्रत्यय, इडागम, ऊकार का गुण ओकार, ओकार को अवादेश होने पर भवितास् थ होक भवितास्थ यह रूप सिद्ध होता है।

भवितास्मि, भवितास्वः भवितास्मः - (यहाँ प्रक्रिया पूर्व के समान कहनी चाहिए।)

भू धातु के लुट् लकार में रूप नीचे पट्टिका में प्रदर्शित किए गये हैं -

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	भविता	भवितारौ	भवितारः
मध्यमपुरुषः	भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ
उत्तमपुरुषः	भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः

रूपसाधन

भविता -

(भविता यह रूप बहुत सूत्रों में व्याप्त है। उसकी खण्डशः प्रक्रिया कुछ-कुछ आगे आती है। अतः सभी सूत्रों का परिशीलन करके सभी खण्डों को एकत्रित करके समग्र रूप को साधनीय है यह जानना चाहिए। भविता का यह एक रूप यहाँ प्रदर्शित किया जाता है। अन्य रूप छात्र के द्वारा स्वयं करने योग्य है।)

1. **धातुपरिचय** - सत्तार्थ में वर्तमान भ्वादिगण में पठित भूवादयो धातवः इस से धातुसंज्ञक अकर्मक सेट् भू यह धातु है।

2. **लकारविधान, लकार के स्थान पर तिप् आदिविधान** - भूधात्वर्थ सत्ताक्रिया का भविष्यत् अनद्यतन काल में वृत्तित्व विवक्षा में अनद्यतने लुट् इस सूत्र से भू धातु से विवक्षा होने से कर्ता में लुट्, अनुबन्धलोप होने पर भू ल् यह होने पर लस्य इसको अधिकृत करके तिप्तस्झि-सिप्थस्थ-मिब्वस्मस्-तातांझ-थासाथांध्वम्-इड्वहिमहिङ् इस सूत्र से अष्टादश लादेश प्रसक्त होने पर भू धातु से आत्मनेपद निमित्तहीन होने से शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् इस सूत्र से तिप् आदि नौ प्रत्यय प्रसक्त होने पर मध्यमोत्तम का अविषय होने से और कर्ता के एकत्व होने से प्रथमपुरुषैकवचन विवक्षा में तिप्, अनुबन्धलोप होने पर भू ति यह स्थिति होती है।

3. **तिबादेशविधान, विकरणविधान** - भू ति इस स्थिति में वहाँ भू धातु से लुट् स्थानिक तिप् पर में होने पर तिङ् शित् सार्वधातुकम् इस सूत्र से तिप् के सार्वधातुक होने से और कर्ता में विहित होने से कर्त्रर्थ में सार्वधातुक परे में रहते कर्तरि शप् इस सूत्र से शप् प्रसक्त होने पर प्रकृतसूत्र से शप् को अपवाद रूप से बाधकर तास् प्रत्यय होने पर भू तास् ति यह स्थिति हुई। तास् इसके तिङ् भिन्न होने से और शित् भिन्न होने से, धातोः यह विहित होने से आर्धधातुकं शेषः इस सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा होती है। और तास् वलादि है। अतः आर्धधातुकस्येड् वलादेः इस सूत्र से इडागम होने पर टित्त्व होने से तास् के आद्यावयव होने पर भू इतास् ति यह स्थिति हुई। इतास् यह समुदाय प्रत्यय, और आर्धधातुकसंज्ञक है।

टिप्पणियाँ

आर्धधातुक पर में रहते सार्वधातुकार्धधातुकयोः इस सूत्र से इगन्ताङ्ग भू के ऊकार के स्थान पर स्थान के आन्तर्य से गुण ओकार होने पर भो इतास् ति यह स्थिति र होती है। तब इतास् इसके अच् इकार पर में रहते एचोऽयवायावः इस सूत्र से अवादेश होने पर भव् इतास् ति अवस्था हुई। वहाँ लुट् के स्थान पर विहित तिप् प्रथमसंज्ञक है। तिप् के स्थान पर यथासंख्यमनुदेशः समानाम् इस परिभाषा से प्रकृतसूत्र से अनेकाल्शित् सर्वस्य इस सूत्र से डा यह सर्वादेश होने पर भव् इतास् डा इस स्थिति में डा इसके स्थानिवद्भाव होने से और प्रत्ययत्वविज्ञान होने से चुटू इस सूत्र से प्रत्ययाद के आदि डकार की इत्संज्ञा होने पर और तस्य लोपःसे लोप करने पर भव् इतास् आ यह स्थिति होती है।

तिप् प्रत्यय के स्थान पर विहित डा भी स्थानिवद्भाव होने से प्रत्ययसंज्ञक है। इस प्रकार डित्त्वसामर्थ्य से अभसंज्ञक होने पर भी टि इतास् इसके आस् इसका लोप होने पर भव् इत् आ इस स्थिति में वर्णमेलन होने से भविता यह रूप सिद्ध होता है।

नीचे कुछ धातुएँ दी गई हैं। उनके रूप यहाँ तक अतिक्रान्त कुछ सूत्रों का प्रयोग करके सिद्ध कर सकते हैं। उन रूपों को अभ्यास के लिए छात्र द्वारा सिद्ध करना चाहिए।

1. **पठ व्यक्तायां वाचि** - पठिता, पठितारा, पठितारः। पठितासि, पठितास्थः, पठितास्थ। पठितास्मि, पठितास्वः, पठितास्मः।

2. **गद व्यक्तायां वाचि** - गदिता, गदितारौ, गदितारः। गदितासि, गदितास्थः, गदितास्थ। गदितास्मि, गदितास्वः, गदितास्मः।

3. **अर्च पूजायाम्** - अर्चिता, अर्चितारौ, अर्चितारः। अर्चितासि, अर्चितास्थः, अर्चितास्थ। अर्चितास्मि, अर्चितास्वः, अर्चितास्मः।

4. **व्रज गतौ** - व्रजिता, व्रजितारौ, व्रजितारः। व्रजितासि, व्रजितास्थः, व्रजितास्थ। व्रजितास्मि, व्रजितास्वः, व्रजितास्मः।

5. **कटँ वर्षावरणयोः** - कटिता, कटितारौ, कटितारः। कटितासि, कटितास्थः, कटितास्थ। कटितास्मि, कटितास्वः, कटितास्मः।

6. **क्षि क्षये** - क्षयिता, क्षयितारौ, क्षयितारः। क्षयितासि, क्षयितास्थः, क्षयितास्थ। क्षयितास्मि, क्षयितास्वः, क्षयितास्मः।

7. **चितीं संज्ञाने** - चेतिता, चेतितारौ, चेतितारः। चेतितासि, चेतितास्थः, चेतितास्थ। चेतितास्मि, चेतितास्वः, चेतितास्मः।

8. **शुच शोके** - शोचिता, शोचितारौ, शोचितारः। शोचितासि, शोचितास्थः, शोचितास्थ। शोचितास्मि, शोचितास्वः, शोचितास्मः।

पाठगत प्रश्न 14.3

1. लुट् किस अर्थ में विधान किया जाता है?
2. धात्वर्थव्यापार के अनद्यतन भविष्यत् वृत्तित्व विवक्षा होने पर कौनसा लकार विधान करने योग्य है?
3. भवितास्मि यह किस लकार में रूप है?
4. भवितास्मि यहाँ विकरणं क्या है। किस सूत्र से विहित है?
5. तास् किसका अपवाद है?
6. लुटः प्रथमस्य डारौरसः यहाँ प्रथमान्त कौन से हैं?
7. डा-रौ-रसः किसके स्थान पर और किस लकार में विधान किए जाते हैं?
8. तास् और अस्ति के सकार का लोप सादि प्रत्यय पर में रहते किस सूत्र से होता है?
9. भवितारौ यहाँ रूप में तास् के सकार का लोप किस सूत्र से होता है?

पाठ का सार

इस पाठ में लिट् और लुट् यह दो लकार रखे गए हैं। धातु का अर्थ व्यापार यदि अनद्यतन भूतकालीन हो और वक्ता को अप्रत्यक्ष हो तब उस धातु से परोक्षे लिट् इस सूत्र से लिट् लकार प्रयोग किया जाता है। लिट् के आर्धधातुक होने से यहाँ शबादिक नहीं होता है। लिट् लकार में तिङों के स्थान पर परस्मैदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः इस सूत्र से णलादि आदेश होते हैं, इस लकार का एक विशेष है। लिट् परे में रहते अनभ्यास धातु के अवयव का द्वित्व लिटि धातोरनभ्यासस्य इस सूत्र से होता है यह दूसरा विशेष है। द्वित्व में जो पूर्व है उसकी अभ्यास संज्ञा पूर्वोऽभ्यासः इस सूत्र से होती है। और उस अभ्यास का हलादिः शेषः इस सूत्र से आदि हल् शेष रहता है और अन्य हलों का लोप होता हैं। इस प्रकार अचों का लोप नहीं होता है। अभ्यास के अच् का ह्रस्वः इस सूत्र से ह्रस्वत्व होता है। भू धातु के भवतेरः इस सूत्र से उकार का अकारो होता है। अभ्यासे चर्च इस सूत्र से अभ्यास के झशों को जश् और खयों को चर् विधान होता है। वलादि आर्धधातुक हो तो उसका आर्धधातुकस्येड् वलादेः इस सूत्र से इडागम विधान होता है। इस प्रकार कुछ मुख्य सूत्र और उनके कार्य लिट् लकार में हैं। यहाँ से भी अन्य सूत्र और कार्य हैं उनको अग्रिम प्रकरणों में देखेगें। लिट् के सम्यक् ज्ञान के लिए लिट् के पठनानन्तर आगे लिट् के प्रकरण को पढना चाहिए।

धातु का अर्थ व्यापार हो अनद्यतन भविष्यत्काल हो तो उस धातु से अनद्यतने लुट् इस सूत्र से लिट् लकार प्रयोग किया जाता है। स्यतासी. इस सूत्र से लुट् पर में रहते धातु से तास् होता है।

इस प्रकार लुटः प्रथमस्य डारौरसः इस सूत्र से प्रथम के स्थान पर डा रौ रस् ये विधान होते हैं। उसके बाद सादि प्रत्यय परे होने पर तास् के स का लोप तासस्त्योर्लोपः इस सूत्र से होता है, और रादि प्रत्यय परे रहते रि च इस सूत्र से तास् के स का लोप होता है।

इस प्रकार संक्षेप में यह जानना चाहिए कि लिट् पर में रहते णलादि, द्वित्व,हलादिशेषत्व, ह्रस्वत्व, चर्त्व, जश्त्व ये सब मुख्य कार्य हैं। और लुट् परे तास्, डा, रौ, रस्, तास् के स का लोप ये मुख्य कार्य हैं।

पाठांत प्रश्न

1. परोक्षे लिट् इस सूत्र की व्याख्या कीजिए?
2. णलादि सर्वादेश कैसे है, यह लिखिए?
3. लिटि धातोरनभ्यासस्य इस सूत्र की व्याख्या कीजिए?
4. अभ्यासे चर्च इस सूत्र क की व्याख्या कीजिए?
5. अभ्यास कार्यों को आश्रित करके प्रबन्ध का वर्णन कीजिए?
6. आर्धधातुकस्येड् वलादेः इति सूत्रं व्याख्येयम्।
7. बभूव बभूविथ बभूवुः इति एतानि रूपाणि ससूत्रं साधयत।
8. अनद्यतने लुट् इति सूत्रं व्याख्यात।
9. स्यतासी लृलुटोः इति सूत्रं व्याख्यात।
10. तासस्त्योर्लोपः इति सूत्रं व्याख्यात।
11. ससूत्रं रूपाणि साधयत भविता, भवितारौ, भवितासि, भवितास्मः।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

14.1

1. इन्द्रिय अगोचरत्व परोक्षत्व है।
2. धातोः अर्थः व्यापारः अर्थात् क्रिया अनद्यतने भूते परोक्षे च वर्तते इति विवक्षितं चेत् तस्माद् धातोः लिट् विधीयते।
3. तिपं निवर्त्य णल् यावत् तिपः स्थानम् अधिकरोति तावत् णल् न प्रत्ययः। स्थानिवद्भावेन तस्य यदा प्रत्ययत्वम् अतिदिश्यते तदा चुटू इति सूत्रेण प्रत्ययाद्यस्य णकारस्य इत्संज्ञा भवति।

तत: तस्य लोप: इति लोपोऽभवति। अत एव विधानात् पूर्व णस्य इत्संज्ञालोपयो: अभावे णल: अलेकाल्त्वमस्ति। अत: अनेकाल्शित् सर्वस्य इति सूत्रेण णल् सर्वस्य तिप: स्थाने भवति।

4. भुव: वुक् लुङि लिटि च।
5. १

14.2

1. लिटि धातोरनभ्यासस्य।।
2. षाष्ठद्वित्वप्रकरणे ये द्वे विहिते, तयो: पूर्वस्य अभ्यास संज्ञा भवति।
3. अभ्यासस्य आदे: हल: शेष:।
4. अभ्यासस्याचो ह्रस्व:।
5. ह्रस्व:।
6. भूधातो: अभ्यासस्य उकारस्य अकार: लिटि परे।
7. भूधातो: अभ्यासस्य उकारस्य अकार: लिटि परे।
8. अभ्यासे झलां चर् जश् च। झशां जश: खयां चर: इति विवेक:।
9. आर्धधातुकस्येड् वलादे:ध

14.3

1. धात्वर्थव्यापारस्य अनद्यतने भविष्यति वृत्तित्वविक्षायां लुट् लकार: विधेय:।
2. लुट्
3. लुटि मिपि रूपम्।
4. तास्। स्यतासी लृलुटो: इति सूत्रेण विहितम्।
5. शप् श्यन् श: श्नु: श्नम्, उ, श्ना इत्यादीनाम् लुटि परत: प्राप्तानां विकरणानाम्।
6. लुट: प्रथमस्य डारौरस: इत्यत्र प्रथमा: - तिप् तस्-झि इति परस्मैपदसंज्ञका: त्रय:, त-आताम्-झ इति आत्मनेपदसंज्ञका: त्रय: सन्ति। एवम् आहत्य षट् प्रथमसंज्ञका: प्रत्यया: सन्ति।
7. डा-रौ-रस: प्रथमसंज्ञकानाम् तिप् तस्-झि इति परस्मैपदसंज्ञकानां, त-आताम्-झ इति आत्मनेपदसंज्ञकानां च स्थाने लुटि लकारे विधीयन्ते।
8. तासेरस्तेश्च सस्य लोप: सादौ प्रत्यये परे तासस्त्योर्लोप: इति सूत्रेण।
9. भवितारौ इत्यत्र रूपे तास: सस्य लोप: रि च इति सूत्रेण।

।। इति चतुर्दश: पाठ:।।